प्रथम विश्वयुद्ध

1914 ई० में प्रारंभ हुआ विश्वयुद्ध न केवल यूरोप का, वरन् विश्व इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। इस युद्ध की लपटें पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, जल तथा आकाश चारों ओर फैली हुई थीं।

प्रथम विश्वयुद्ध के कारण

1- दल प्रथा (Party System) -

बीसवीं सदी के प्रारंभ तक यूरोप दो सैनिक दलों में विभक्त हो चुका था। सर्व प्रथम 1879 ई० में जर्मनी ने आस्ट्रिया के साथ द्वि-राष्ट्र संधि (Dual Alliance) की। शीघ्र ही इटली भी 1882 ई० में इस दल में सम्मिलित हो गया। इस प्रकार त्रि-राष्ट्र संधि की स्थापना हुई। 1894 ई० में फ्रांस और रूस के बीच संधि हो गई। इंग्लैंड ने भी 1902 ई० में जापान के साथ संधि कर ली। पुनः 1904 ई० में इंग्लैंड ने फ्रांस से संधि (Cordaile Entente) की। इस प्रकार यूरोप दो सैनिक दलों में विभक्त हो गया। एक ओर त्रिराष्ट्र संधि में जर्मनी आस्ट्रिया तथा इटली थे, दूसरे खेमे में हार्दिक मैत्री

सम्बन्ध की स्थापना हुई। इस प्रकार यूरोप दो सैनिक दलों में विभक्त हो गया। एक और त्रि-राष्ट्र संधि में जर्मनी, आस्ट्रिया तथा इटली थे, दूसरे खेमे में 'हार्दिक मैत्री संबंध' के फ्रांस, इंग्लैंड तथा रूस थे।

2- गुप्त कूटनीति (Secret diplomacy) -

सन्धियां गुप्त होने लगी थीं। जिसकी जानकारी जनता और अन्य देशों के राजनीतिज्ञों को नहीं थी। इटली यद्यपि जर्मनी एवं आस्ट्रिया के साथ त्रि-राष्ट्र संधि कर चुका था तथापि गुप्त रूप से इंग्लैंड एवं फ्रांस से भी मित्रता की बात कर रहा था।

3)- राष्ट्रवाद की भावना -

इस समय यूरोप में दो प्रमुख राष्ट्रवाद संबंधी आन्दोलन चल रहे थे जर्मनी में 'पान जर्मन आन्दोलन (Pan German Movement) चल रहा था, जिसका उद्देश्य जर्मनी को जो यूरोप के विभिन्न राज्यों में रह रहे थे, उन्हें जर्मनी के अन्तर्गत लाना था। इसी प्रकार एक अन्य आन्दोलन 'पान स्लाव-आन्दोलन' था जिसके द्वारा स्लाव जाति रूस में सर्वाधिक संख्या में थी तथा स्वयं को संगठित रखना चाहती थी।

(4) साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा -

यूरोप की सभी शक्तियों में प्रत्येक देश अधिक से अधिक उपनिवेश स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील था। औद्योगिक क्रांति ने उपनिवेश के महत्व को और अधिक बढ़ा दिया था। इंगलैंड और फ्रांस के पास अनेक उपनिवेश थे। जर्मनी की इंगलैंड व फ्रांस के उपनिवेशों पर भी दृष्टि थी। ऐसी स्थिति में संघर्ष होना निश्चित ही था।

(5) सैनिकवाद की भावना -

यूरोप में 19वीं शताब्दी के अन्त तक उग्र सैनिक भावना का जन्म हुआ तथा तीव्रता से चारों ओर इसका प्रसार हुआ। प्रत्येक देश में सेना के विस्तार एवं हथियारों के लिए प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हो गई। कुछ विचारकों जैसे ट्रीटस्की ने अपनी कृति पॉलिटिक्स में बल प्रयोग ही अधिकार है के सिद्धान्त को सराहा। इस प्रकार सैनिकवाद की भावना यूरोपीय राष्ट्रों को निरन्तर युद्ध की ओर अग्रसर कर रही थी।

(6) अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव -

प्रथम विश्वयुद्ध के समय यूरोप अथवा विश्व में कोई अन्तर्राष्ट्रीय संस्था नहीं थी, संस्था के अभाव में

राष्ट्रों में पारस्परिक वैमनस्य बढ़ता ही जा रहा था, जिसका अन्त विश्व-युद्ध के रूप में हुआ।

(7) अल्सेस एवं लॉरेन प्रदेश—

(7) 1807 में जर्मनी ने फ्रांस को परास्त किया तथा अल्सेस एवं लॉरेन प्रदेश पर अधिकार कर विश्व युद्ध के एक कारण को जन्म दिया। फ्रांस के लिए अल्सेस एवं लॉरेन का अत्यधिक महत्व था क्योंकि ये प्रदेश लुई चौदहवें की विजयों के प्रतीक थे, इसके अतिरिक्त लॉरेन में लोहे की खानों के कारण इसका आर्थिक और औद्योगिक महत्व भी था। इन्हीं कारणों से फ्रांस एवं जर्मनी के संबंध कटु होते गए।

8) बोस्निया एवं हर्जेगोविना

1878 में बर्लिन संधि के द्वारा ये दोनों प्रदेश प्रशासन हेतु आस्ट्रिया के अधिकार में दिए गए थे, किंतु आस्ट्रिया पर इन्हें अपने राज्य में मिलाने पर प्रतिबन्ध लगाया गया। इन दोनों प्रदेशों में स्लाव जाति रहती थी। आस्ट्रिया ने 1908 में बर्लिन संधि की अवहेलना कर दोनों प्रदेश को अपने राज्य में विलीन कर लिया।

P.T.O

9) मोरक्को संकट -

1904 ई० में इंग्लैंड और फ्रांस में संधि हो जाने से जर्मनी अत्यंत चिंतित हुआ। 1905 में मोरक्को में कुछ विद्रोह को दबाने के लिए फ्रांस ने सेना भेजी, जिसका जर्मनी ने घोर विरोध किया तथा फ्रांस को जर्मनी द्वारा रखी गई अपमानजनक शर्तें स्वीकार करनी पड़ी। कुछ वर्ष पश्चात् मोरक्को में अव्यवस्था फैलने पर फ्रांस ने पुनः सेना भेजी। जर्मनी ने भी अपना जहाजी बेड़ा मोरक्को भेजा, लेकिन इस समय तक त्रिदेश मैत्री संधि 1907 (Triple Entente) हो चुकी थी। इंग्लैंड ने युद्ध अवसर पर जर्मनी को धमकी दी, जिससे जर्मनी को पीछे हटना पड़ा, लेकिन वह प्रतिशोध लेने का अवसर ढूंढने लगा।

10) इटली की परतंत्रता -

इटली पर आस्ट्रिया ने अधिकार कर रखा था, जिसे इटली को निराशा हो रही थी। जर्मनी आस्ट्रिया का समर्थन कर रहा था। अतः त्रिराष्ट्र का सदस्य होते हुए भी इसने इंग्लैंड, फ्रांस व रूस का समर्थन करने का निर्णय लिया। परिणाम-स्वरूप शक्ति संतुलन भंग हो गया तथा युद्ध के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे।

11/ बाल्कन युद्ध -

प्रथम और द्वितीय बाल्कन युद्धों के परिणाम स्वरूप सर्बिया को काफी भूमि प्राप्त हुई जिसका अप्रत्यक्ष लाभ रूस को था इन युद्धों से आस्ट्रिया एवं जर्मनी का प्रयोजन अहित हुआ। अतः यदि वे अपने हित की प्राप्ति की अपेक्षा करेंगे तो युद्ध निश्चय होगा।

12/ विलियम कैसर द्वितीय की महत्वाकांक्षाएं -

जर्मनी के शासक कैसर द्वितीय को प्रथम विश्वयुद्ध का जन्मदाता कहा जाता है। कैसर अत्यंत महत्वाकांक्षी व्यक्ति था, वह सैनिक शक्ति के आधार पर विश्व विजेता बनना चाहता था। वह जल सेना और थल सेना को समान शक्तिशाली बनाना चाहता था। इंग्लैंड जर्मनी की इस नीति से काफी चिंतित था। कैसर के उत्तेजक भाषणों से यूरोप का वातावरण अत्यंत तनावपूर्ण हो गया। कैसर पूर्व की ओर विस्तार कर बर्लिन-बगदाद रेलवे लाइन बनाने का प्रयास किया। जर्मनी के पूर्व में अग्रसर होने से इंग्लैंड के स्वर्ग उपनिवेशों के लिए खतरा उत्पन्न हो जाता। अतः इंग्लैंड ने जर्मनी का विरोध किया। इस प्रकार कैसर विलियम की नीतियों के परिणामस्वरूप युद्ध होना निश्चित हो गया।

13/ समाचार पत्र -

विभिन्न देशों में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों ने भी युद्ध की जनता देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने जनता की भावनाओं को भड़काया कि

14/ युद्ध का तात्कालिक कारण -

प्रथम विश्व-युद्ध के प्रारंभ होने का तात्कालिक कारण सरायेवो हत्याकांड का होना था। इंगलैंड का राजकुमार तथा आस्ट्रिया के साम्राज्य का उत्तराधिकारी 28 जून 1914 ई० को सेना का निरीक्षण करने गया था, कि उसकी तथा उसकी पत्नी की एक बोस्नियन युवक ने हत्या कर दी। आर्क ड्यूक फर्डिनेंड एवं उसकी पत्नी का हत्यारा पान-स्लाव आंदोलन का उग्रवादी समर्थक था। अतः आस्ट्रिया ने सर्बिया की सरकार को इस हत्याकांड के लिए उत्तरदायी ठहराया।

रूस ने सर्बिया के पक्ष में आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। जर्मनी ने भी प्रत्युत्तर में रूस व फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। जर्मनी ने इंगलैंड के अनेक जहाजों को पकड़ा व उनका सामान छीनकर 1839 ई० में लंदन की संधि को भंग कर दिया।

इस प्रकार यूरोपीय राष्ट्रों की नीतियों के कारण विश्वयुद्ध की शुरुआत हुई।

प्रथम विश्वयुद्ध के परिणाम

प्रथम विश्वयुद्ध में 36 देशों ने भाग लिया। इस युद्ध में अपार धन और जन की हानि हुई थी।

प्रथम विश्वयुद्ध ने विश्व की सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक ~~सब~~ स्थिति पर गंभीर प्रभाव डाले।

इस युद्ध में नवीनतम हथियारों के प्रयोग हुए, फलतः देशों में आधुनिकतम हथियारों के अविष्कार के लिए ~~प्रतिस्पर्धा~~ प्रतिस्पर्धा होने लगी।

- इस युद्ध के परिणामस्वरूप प्रजातंत्र एवं राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ जिससे विश्व के विभिन्न देशों में स्वतंत्रता-प्राप्ति के आंदोलनों में तीव्रता उत्पन्न हुई तथा आस्ट्रिया, पोलैंड, लटाविया, चेकोस्लोवाकिया आदि देशों में प्रजातंत्रात्मक शासन पद्धति की स्थापना हुई। राष्ट्रीयता के आधार पर अनेक नवीन राज्यों का उदय हुआ।
- इटली और जर्मनी में नाजीवाद तथा फासीवाद का उदय हुआ।
- इंगलैंड और फ्रांस की शक्ति इस युद्ध के पश्चात् अत्याधिक बढ़ गई तथा उसके राष्ट्रीय सम्मान में भी वृद्धि हुई।
- अमरीका के राष्ट्रपति विल्सन ने शांति-स्थापना के लिए चौदह सिद्धांतों का

प्रतिपादन किया तथा शांति एवं सुरक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्था राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई।

- इस युद्ध के दौरान ~~साम~~ रूस में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई तथा अमरीकी प्रभाव का विश्व पटल में वृद्धि होने लगी।

युद्ध के पश्चात मित्र-राष्ट्रों ने जर्मनी के साथ वर्साय की संधि (28 June, 1919), आस्ट्रिया के साथ सेंट-जर्मेन की संधि (10 Sept 1919), बुल्गारिया के साथ 27 नवम्बर 1919 तथा तुर्की के साथ 10 अगस्त 1920 को सेव्र की संधि की। इन समस्त संधियों में जर्मनी के साथ की गई वर्साय की संधि अत्यंत महत्वपूर्ण थी, इसके द्वारा मित्र-राष्ट्रों ने पराजित राष्ट्रों के साथ प्रतिशोधात्मक व्यवहार करते हुए अत्यंत कठोर शर्तें रखीं। जर्मनी के विरुद्ध विशेष रूप से वर्साय की संधि में अत्यंत कठोर व्यवहार किया गया था ताकि जर्मनी को स्थायी रूप से निर्बल बनाया जा सके।

मित्र राष्ट्रों इस कठोर व्यवहार का परिणाम यह हुआ कि पराजित राष्ट्रों में प्रतिशोध की भावना जाग्रत होने लगी तथा वे प्रतिशोध लेने के अवसर की प्रतिक्षा करने लगी, अतः कुछ ही वर्षों के उपरान्त पुनः एक भयंकर युद्ध की अग्नि प्रज्वलित हो उठी, जिसे द्वितीय विश्वयुद्ध कहा गया।